दर्शनशास्त्र का इतिहास
48 ह्यूम ऑन रिलीजन एंड एथिक्स,
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

मैं यह बताकर शुरू करना चाहता हूँ कि धार्मिक मामलों से जुड़ी उनकी दो बड़ी रचनाएँ हैं, डायलॉग्स कंसर्निंग नेचुरल रिलिजन और ए नेचुरल हिस्ट्री ऑफ़ रिलिजन। ये डायलॉग असल में नेचुरल थियोलॉजी, भगवान के होने के लिए क्लासिक तर्कों की सच्चाई, ऑन्टोलॉजिकल, कॉस्मोलॉजिकल और टेलियोलॉजिकल के बारे में हैं। और यह बात तीन किरदारों के साथ एक डायलॉग के रूप में है, जो बेशक, तीन अलग-अलग नज़रिए दिखाते हैं, उनमें से एक थोड़ा शक करने वाला, एक थोड़ा लॉकियन, और एक थोड़ा प्लेटोनिक रहस्यवादी।

और इसलिए, आपको बहुत ज़ोरदार बहस देखने को मिलती है। मैं बहस की डिटेल में नहीं जाना चाहता। स्टम्पफ में इस पर कुछ कमेंट है, और अगर आप चाहें तो कोबलस्टन में इसे और अच्छे से देख सकते हैं ।

मुझे लगता है कि यह कहना ज़रूरी है कि यह नेचुरल थियोलॉजी के दावों की पूरी तरह से आलोचना है, तर्कों की आलोचना है। इसे इस तरह करने पर कोई थियोलॉजिकल आपत्ति नहीं है। आपत्तियाँ बात यह है कि तर्क काम नहीं करते।

आधार लॉजिकली नतीजे नहीं देते। और ह्यूम के समय से लेकर आज तक, मुझे लगता है कि यह कहना सही होगा कि धर्म की फिलॉसफी में एक मेनस्ट्रीम रही है जो इस बात से सहमत रही है कि तर्क इतने पूरे, पक्के, इतने साफ नहीं हैं कि पहले कारण, एक रैशनल डिज़ाइनर, सबसे अच्छा, वगैरह के होने को साबित कर सकें। अब इसका मतलब यह नहीं है कि तर्कों का कोई वज़न नहीं है।

असल में, ह्यूम खुद डायलॉग्स के आखिरी हिस्से में मानते हैं कि हाँ, उनका काफी वज़न है, और उन्हें लगता है कि क्लीनथेस की बात से वह सबसे ज़्यादा सहमत हैं। क्योंकि यह एक तरह का इंप्रेशन है, और ह्यूम के टेक्निकल मतलब में इंप्रेशन ही सही शब्द है, क्योंकि यह इंप्रेशन कि नेचर का ऑर्डर , प्रेडिक्टेबिलिटी, वगैरह , इसका हम पर असर पड़ता है । इसलिए, एक लॉजिकल, तार्किक नज़रिए से, जबकि मामला किसी भी तरह से साफ़ नहीं है, लॉजिकली पूरा नहीं है, यह दिखाया नहीं गया है, हमारे पास भगवान के बारे में दिखाने वाला ज्ञान नहीं है, जैसा कि लॉक ने कहा, फिर भी ऐसा लगता है कि वहाँ कुछ ऐसा है जो विश्वास जगा सकता है।

अब, डायलॉग विश्वास के लॉजिक से जुड़े हैं। लेकिन धर्म का नेचुरल हिस्ट्री विश्वास की साइकोलॉजी से जुड़ा है। और अगर आप चाहें, तो आप 'इंसानी समझ से जुड़ी जांच' के पहले सेक्शन में बताए गए इन दोनों के बीच के रिश्ते को देख सकते हैं, जहाँ वह लॉजिकल सबूतों की कोशिश वाली गहरी फिलॉसफी और प्रैक्टिकल फिलॉसफी के बीच फर्क बताते हैं, जिस तरह की चीज़ों के हिसाब से लोग जीते हैं , आप देखिए।

और उनका इरादा इसे नेचुरल थियोलॉजी के लॉजिकल तर्कों और विश्वास के साइकोलॉजिकल आधार के बीच के अंतर से दिखाना है, जिसे वे नेचुरल हिस्ट्री मामले में डेवलप करते हैं। और जैसा कि इंक्वायरी के पहले सेक्शन में, वे कहते हैं कि हमें असल में दोनों के कुछ कॉम्बिनेशन की ज़रूरत है, ऐसा लगता है कि वे इसके बारे में कह रहे हैं। मामले धार्मिक । ध्यान दें कि मैंने डायलॉग के आखिर में क्या कहा।

वे तर्क के लॉजिक से निपट रहे हैं, लेकिन आखिर में, वह विश्वास की साइकोलॉजी की अपील करते दिखते हैं, आप देखिए। लॉजिक आपको यह साफ़ करने में मदद करता है कि आप कहाँ खड़े हैं, हालाँकि विश्वास में जो साइकोलॉजिकल दबाव शामिल है, वह लॉजिक से नहीं आता है। यह कहीं और से आता है।

तो धर्म का नेचुरल हिस्ट्री उन साइकोलॉजिकल फैक्टर्स से डील करता है जो विश्वास में योगदान करते हैं। उनका मानना है कि मोनोथेइज़्म ऐतिहासिक रूप से पहले के पॉलीथेइज़्म से विकसित हुआ, एक भगवान में विश्वास पहले के कई भगवानों में विश्वास से विकसित हुआ। और मुझे लगता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें पॉलीथेइज़्म को समझाना आसान लगता है।

कुछ नैचुरल साइकोलॉजिकल डेवलपमेंट के मामले में। क्योंकि आखिर, इंसान होने के नाते, हमारी ज़िंदगी में कई अलग-अलग चिंताएँ एक जैसी होती हैं । हमें खाने की ज़रूरत होती है।

हमें खाना चाहिए। हमें किसी तरह की सिक्योरिटी, शांति, वगैरह चाहिए। ताकि हमारे पास अलग-अलग तरह के इमोशन, डाइमेंशन और इमोशनल लाइफ के एरिया हों।

और कुदरत की दुनिया में हमारे अनुभव के कुछ पहलू ऐसे हैं जो शायद असर, इमोशनल असर छोड़ जाते हैं। ऐसे असर जो किसी वजह, किसी जीव की सोच को जन्म देते हैं, जो यह सब कर रहा है। और इसलिए ऐसी कई तरह की चिंताएँ, ऐसे असर, कई तरह के भगवान।

पॉलीथीइज़्म एक नैचुरल साइकोलॉजिकल डेवलपमेंट है। लेकिन, मोनोथीइज़्म तभी डेवलप होता है, जब लॉजिकल, सोचने-समझने वाली सोच सामने आती है। और कई भगवानों वगैरह के बारे में सोचने से कुछ ऐसे सवाल उठते हैं जिनके जवाब नहीं मिले, या शायद कुछ प्रॉब्लम होती हैं।

क्योंकि सोचने पर, हम पहचानते हैं कि प्रकृति में एक तरह की व्यवस्थित एकता है। सोचने पर, हम इसे पहचानते हैं। और इसलिए हम इस व्यवस्थित एकता के पीछे एक होने के बारे में सोचने लगते हैं।

आप जानते हैं, यह उसी तरह की सोच है जिससे प्री-सोक्रेटिक्स मेटाफ़िज़िक्स में गुज़रे थे। कई चीज़ों के बजाय एक ही अल्टीमेट क्यों है? तो वह देखते हैं कि डायलॉग्स में, दूसरी तरफ़, टेलियोलॉजिकल तर्क चीज़ों की ऑर्डर्ड यूनिटी के बारे में बात करता है। ह्यूम दूसरे कैरेक्टर्स में से एक के ज़रिए जो रिस्पॉन्स देते हैं, वह यह है कि, लेकिन इसमें हमारी यूनिटी का आइडिया शामिल है।

हमें कैसे पता चलेगा कि असल में एकता है? हम ही हैं जो अलग-अलग आसान आइडिया को मुश्किल आइडिया में मिलाते हैं और एक दुनिया बनाते हैं, आप देखिए। लेकिन लॉजिकली आप दुनिया की एक जैसी एकता को साबित नहीं कर सकते, आप बस दुनिया के बारे में अपने आइडिया की एक जैसी एकता जानते हैं। मुश्किल आइडिया शुरू होने वाले आइडिया नहीं होते।

हालांकि ऐसा है, लेकिन साइकोलॉजिकली यह अभी भी सच है कि इस पर सोचने से हम उस ऐतिहासिक विकास से दूर चले जाते हैं। उन्हें लगता है कि मोनोथेइज़्म बस एक लॉजिकल सोच है, एक अंदाज़ा लगाने वाली सोच है। नेचुरल थियोलॉजी से निकला नेचुरल धर्म।

इस मायने में, मोनोथेइज़्म कल्पना पर असर नहीं डालेगा और न ही वे इंप्रेशन, फीलिंग्स पैदा करेगा, और नतीजतन मोनोथेइज़्म किसी तरह के पॉलीथीइज़्म को रास्ता दे सकता है। अब, हिस्टॉरिकली, आप मोनोथेइज़्म के बाद पॉलीथीइज़्म कैसे पाते हैं ? खैर, वह कह रहे हैं कि साइकोलॉजिकल ट्रेन नैचुरली वहीं ले जाएगी। मुझे लगता है कि असल में हमारे पास जो है वह मोनोथेइज़्म है क्योंकि यह अपनी जान खो देता है, जिससे वह चीज़ पैदा होती है जिसे मैं सेक्युलरिस्टिक पॉलीथीइज़्म कहूंगा।

कहने का मतलब है, एक सेक्युलर समाज जिसके अपने भगवान हैं। वो पैसे के भगवान हैं, वो सेक्स के भगवान हैं, वो पावर के भगवान हैं, आप देखिए। इस तरह की चीज़ें, किसी भी एक नज़रिए का खत्म होना।

लेकिन इतिहास में, सच तो यह है कि नेचुरल धर्म लंबे समय तक जीवन को एक्टिवेट नहीं कर सकता, लेकिन ज़रूरत इस बात की है कि इतिहास में एक्टिव उस एक ईश्वर का कोई हिस्टोरिकल अकाउंट हो। ह्यूम ऐसा कहते हैं। और ज़ाहिर है, वह इतिहास में एक्टिव ईश्वर और अवतार की क्रिश्चियन कहानी की बात कर रहे हैं।

तो उनका कहना है कि धार्मिक विश्वास उन चीज़ों से बनता है जो ऐतिहासिक रूप से इंसानी अनुभव में और हर किसी के अनुभव में होती हैं, जो भावनाएँ जगाती हैं, ऐसी छापें जो जो हो रहा है उसके कारण के बारे में विचार पैदा करती हैं। तो, धार्मिक विश्वास का एक साइकोलॉजिकल हिसाब। इन सब के प्रोसेस में, ह्यूम ने सोच के इतिहास के लिए जो किया है, धर्म का इतिहास पिछले 200 सालों से उसी पर काम कर रहा है।

यानी, चिंता उन ईश्वरवादी तर्कों को फिर से बनाने की है जो सच में सही हैं। ईश्वरवादी तर्कों को फिर से बनाने की कोशिश। इस बात पर चर्चा कि नेचुरल थियोलॉजी किस तरह के भगवान की ओर इशारा करती है।

बुराई की समस्या पहले से कहीं ज़्यादा है। क्योंकि ह्यूम का टेलियोलॉजिकल तर्क पर एक एतराज़, जो प्रकृति के व्यवस्थित मकसद से तर्क देता है, यह है कि बुराई डिस-टेलियोलॉजी, व्यवस्था की कमी, या कम से कम साफ़ मकसद की कमी को दिखाती है। और इसलिए बुराई की समस्या तेज़ी से फ़ोकस में आई।

धर्म में तर्क और भावना के बीच का रिश्ता। ज़ाहिर है, यह एक बहुत ज़रूरी सवाल है। और इसमें धार्मिक अनुभव की सबूतों वाली कीमत का सवाल भी शामिल है।

धार्मिक अनुभव से बहस करना। और फिर आखिर में, धर्म और नैतिकता के बीच संबंध का सवाल। क्योंकि उनका तर्क है कि धर्म लोगों का ध्यान नैतिक और सामाजिक मुद्दों से भटकाता है।

धार्मिक विश्वास के नैतिक नतीजे बिल्कुल एक जैसे नहीं होते। वह यह नहीं कह रहे हैं कि कोई एक जैसे नहीं होते, लेकिन वे काफी एक जैसे नहीं होते। और इस तरह के सवाल ने भगवान के होने के लिए नैतिक तर्कों की कोशिशों को जन्म दिया है।

भगवान के होने के बारे में नैतिकता के तर्क। तो असल में, धर्म की फिलॉसफी के कोर्स में आप जिस पूरे एजेंडे पर बात करते हैं, वह असल में ह्यूम के डायलॉग से निकला एजेंडा है। बात यह है कि इसमें से बहुत कुछ को स्कॉलैस्टिक परंपरा ने अच्छे से हैंडल करके मान लिया था।

धीरे-धीरे यह सब फिर से सामने आया और इस पर नए ध्यान देने की ज़रूरत महसूस हुई। अब, धर्म की फिलॉसफी में नए डेवलपमेंट ह्यूम की वजह से हुए । लेकिन सिर्फ़ ह्यूम मत कहिए, आपको ह्यूम और कांट भी कहना होगा।

जैसा कि हम अगले दो या तीन हफ़्तों में देखेंगे। क्योंकि जब तक कांट प्योर रीज़न की अपनी आलोचना पूरी करेंगे, तब तक उन्होंने भी भगवान के होने के लिए रैशनल प्रूफ़, लॉजिकल प्रूफ़ की ज़बरदस्त आलोचना की होगी। और उन्हें भी लगता है कि धार्मिक विश्वास लॉजिकल प्रूफ़ के अलावा किसी और चीज़ पर आधारित है।

और जब तक वह एथिक्स पर अपनी राइटिंग खत्म करते हैं, तब तक वह हमें भगवान के होने के लिए एक मोरल आर्गुमेंट दे चुके होते हैं। और जब तक वह एस्थेटिक्स और नेचर की सुंदरता के बारे में अपनी राइटिंग खत्म करते हैं, तब तक वह हमें भगवान के होने के लिए एक एस्थेटिक आर्गुमेंट दे चुके होते हैं, लेकिन लॉजिकल प्रूफ नहीं। वह जो करते हैं वह प्रूफ से कुछ कम है।

असल में, वह कह रहे हैं कि नैतिक और एस्थेटिक घटनाओं को समझाने का एकमात्र तरीका यह है कि भगवान मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, नैतिक और एस्थेटिक अनुभव का सही ब्यौरा देने के लिए आपको ईश्वरवाद और ईश्वरवादी नज़रिए की ज़रूरत है। लेकिन हम इसे इमैनुअल कांट तक पहुँचते ही देखेंगे।

तो मैं यहीं रुककर देखता हूँ कि क्या इसमें ऐसी कोई बात है जिसके बारे में आप थोड़ी देर बात करना चाहेंगे। हाँ, ट्रॉय। मैं सोच रहा था जब आपने कहा कि मोनोथिज़्म पॉलीथिज़्म में बदल जाता है।

क्या वह ईसाई धर्म को ऐतिहासिक रूप से देख रहे थे और कह रहे थे कि यह जूडियन सख्त एकेश्वरवाद से शुरू हुआ ? एक तरह के बहुदेववाद के तौर पर त्रिदेववाद तक। हाँ, और शायद

प्रतीकों और संतों का विकास भी। या यह पूरी तरह से सिर्फ़ मनोवैज्ञानिक था? हाँ, आप जानते हैं, मुझे पक्का करने के लिए उस चीज़ के टेक्स्ट को दोबारा चेक करना होगा।

मुझे उसमें ऐसा कुछ याद नहीं है। इसलिए अगर मैं बिना सोचे-समझे जवाब दे रहा होता, तो मैं कहता कि नहीं, यह तो बस पॉलीथीइज़्म के बढ़ने के उनके साइकोलॉजिकल एक्सप्लेनेशन से निकाला गया है। लेकिन मैं वह टेक्स्ट चेक करके आपको बताता हूँ।

मैं वैसे भी सोमवार सुबह इसे किसी और मकसद से दोबारा पढ़ना चाहता था। लेकिन, मैं एक और बात जोड़ना चाहता हूँ। जब आप हेगेल के पास जाते हैं, जो निश्चित रूप से ह्यूम की तरह अनुभववादी नहीं हैं।

उनका एजेंडा ह्यूम के एजेंडा से बहुत अलग है। हेगेल धर्म के इतिहास में एक हिस्टोरिकल डायलेक्टिक को काम करते हुए देखते हैं। थीसिस, एंटीथीसिस, सिंथेसिस।

जहां थीसिस पॉलीथीइज़्म है, एंटीथीसिस पैनथीइज़्म है, और सिंथेसिस, जो सच का सबसे ऊंचा रूप है, वह ट्रिनिटेरियनिज़्म है। हां, इसका एक हिस्सा, लेकिन ट्रिनिटी, तीन में एक, तीन में एक। तो धर्म के ऐतिहासिक विकास का सवाल निश्चित रूप से इस आम समय में, 18वीं सदी के आखिर में, 19वीं सदी की शुरुआत में, लगभग 1800 में मौजूद है।

और मुझे लगता है कि ह्यूम का, धर्म के इतिहास में जांच को बढ़ावा देने में एक अहम हाथ है, जिसमें पहले कोई दिलचस्पी नहीं थी। लगभग 1800 से पहले इतिहास में आम तौर पर कोई दिलचस्पी नहीं थी। यह बस उस चीज़ का हिस्सा है जिसे वे बेले लेट्रे , यानी अच्छी राइटिंग कहते हैं।

हिस्टोरिकल मेथड एक साइंस के तौर पर 1800 के आसपास डेवलप होना शुरू हुआ। असल में, ह्यूम ने खुद इंग्लैंड का इतिहास लिखा था, जिसमें हिस्टोरिकल मेथड शामिल थे, जिसकी वजह से ह्यूम को पहले महान हिस्टोरिकल थिंकर में से एक कहा जा सकता है। एक साइंस के तौर पर इतिहास की शुरुआत।

तो, ठीक है। अब, कोई और। डेविड।

क्या ऐसा कोई सेक्शन नहीं है, भले ही हम कॉज़ल कनेक्शन को पक्के तौर पर नहीं जान सकते, फिर भी हम भगवान के नेचर के बारे में अंदाज़ा लगा सकते हैं, क्योंकि जब हम अपने एक्सपीरियंस में दूसरी चीज़ों को देखते हैं, तो हम उसे एनालॉजी से देखते हैं। हाँ, मुझे लगता है कि वह 'ऑन अ पर्टिकुलर प्रोविडेंस' नाम के सेक्शन में है। जो भगवान के बारे में है।

हाँ, और मुझे लगता है कि यह उसी तरह की सोच है जैसी आपको डायलॉग्स में मिलती है। अब, जब वह अंदाज़ा लगाने की बात करते हैं, तो उनका मतलब लॉजिकली दिखाना नहीं होता। असल में, पहले जब वह इस बात के बारे में बात कर रहे थे कि हम लगातार कंजंक्शन का अनुभव करते हैं और किसी न किसी तरह यह नतीजा निकालते हैं कि एक ज़रूरी कनेक्शन है।

और उन्होंने पहले ही कहा है कि इसमें कोई लॉजिकल स्टेप शामिल नहीं है। वे उस बदलाव के लिए 'इनफर' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। उन मामलों में 'इनफर' का मतलब लगता है एक ऐसा स्टेप जो मन उठाता है, जो शायद लॉजिकल स्टेप न हो।

तो मुझे लगता है कि स्पेशल प्रोविडेंस वाली बात में ऐसा ही है। जब आप कहते हैं कि इंसानियत के बाद लोग, धर्म की फिलॉसफी में, जब आप कहते हैं कि वे गहरे मुद्दों से निपट रहे हैं, तो वे इन तर्कों में निश्चितता बनाने की कोशिश कर रहे हैं? यह अलग-अलग होता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दिखाने वाली निश्चितता देने की कोशिश कर रहे हैं, जैसा कि लॉक कहते हैं।

आम तौर पर, अपील प्रोबेबिलिटी की है, जो उन्हें एविडेंसिस्ट कैंप में रखती है। प्रोबेबिलिटी सबूत का वज़न है। और बहुत कुछ उस एपिस्टेमोलॉजी पर निर्भर करता है जिसके साथ वे काम कर रहे हैं।

अब आप अगले हफ़्ते स्कॉटिश रियलिस्ट थॉमस रीड के बारे में पढ़ने वाले हैं। रीड आइडिया और इंप्रेशन की थ्योरी को पूरी तरह से मना करते हैं। वह रिप्रेजेंटेशनल नॉलेज के पूरे बिज़नेस को ही नकारते हैं।

हमें मैटेरियल बॉडीज़ के बारे में सीधे पता है। आप समझे? इसका मतलब है कि आप एक ऑर्डर्ड यूनिवर्स के आइडिया से बहस नहीं करते । आप एक ऑर्डर्ड यूनिवर्स से बहस करते हैं।

आप समझे? और इसलिए, वह इसके नतीजों को लेकर ज़्यादा पॉजिटिव हो सकते हैं। अब, जबकि रीड ने नेचुरल थियोलॉजी पर कुछ लेक्चर दिए, उन्होंने उस एरिया में ज़्यादा काम नहीं किया। लेकिन उस स्कॉटिश रियलिस्ट परंपरा ने बहुत से लोगों पर असर डाला जिन्होंने किया।

19वीं सदी में रॉबर्ट फ्लिंट नाम के एक स्कॉटिश थियोलॉजिस्ट थे, जो बहुत असरदार थे। उनकी किताब, थीइज़्म, 50 साल पहले भी बहुत इस्तेमाल होती थी। आप चाहें तो इसे लाइब्रेरी में देख सकते हैं।

और प्रिंसटन के थियोलॉजिस्ट, चार्ल्स हॉज, जिनकी सिस्टमैटिक थियोलॉजी की पढ़ाई आज भी लगभग 1860 के दशक से होती आ रही है। जिस फिलॉसॉफिकल फ्रेमवर्क के साथ वे काम कर रहे हैं, वह स्कॉटिश रियलिज्म है। और इसलिए, जैसा कि आप एक स्कॉटिश रियलिस्ट से उम्मीद करेंगे, वे जॉन लॉक की थ्योरी या डेविड ह्यूम की आइडियाज़ की थ्योरी वाले किसी व्यक्ति की तुलना में थियोस्टिक आर्गुमेंट्स को लेकर ज़्यादा पॉजिटिव हैं।

उन्हें लगता है कि उनके पास शुरू करने के लिए निश्चितताएं हैं। तो यह उस परंपरा के साथ बदलता रहता है। और मुझे लगता है कि यह स्कॉटिश रियलिस्ट परंपरा है, जिसे शायद चार्ल्स हॉज ने रिप्रेजेंट किया, लेकिन अमेरिका आए दूसरे लोगों ने भी, जिसने अमेरिकी इवेंजेलिकल माफी को आकार दिया जो भगवान के होने के लिए ईश्वरवादी तर्कों की ओर उन्मुख है।

अब दूसरी तरह की अमेरिकन परंपराएं और माफी भी हैं। लेकिन यह स्कॉटिश रियलिस्ट्स की तरफ से ह्यूम के खिलाफ उस रिएक्शन से निकला। और आप में से कुछ लोग जानते होंगे कि

हिस्ट्री डिपार्टमेंट में मार्क नॉल ने अमेरिकन इवेंजेलिकलिज़्म पर स्कॉटिश रियलिज़्म के असर के बारे में हर तरह की हिस्टोरिकल रिसर्च और पब्लिशिंग की है।

बहुत सारे निबंध। मुझे पक्का नहीं पता कि इस विषय पर उनकी कोई किताब है या नहीं, लेकिन उनके पास इस विषय पर किताबों के कुछ हिस्से हैं। तो अगर आप मार्क नॉल के साथ काम करते हैं, तो ठीक है, आपको उसमें से कुछ मिल जाएगा।

वैसे, व्हीटन कॉलेज के प्रेसिडेंट, जे. ओलिवर बसवेल, जो 30 और 40 के दशक की शुरुआत में प्रेसिडेंट थे, वे काफी हद तक स्कॉटिश रियलिस्ट थे। काफी हद तक चार्ल्स हॉज जैसे आदमी थे। काफी हद तक।

तो व्हीटन में वह असर साफ़ दिख रहा था। असल में, जब मैं यहाँ अंडरग्रेजुएट था, तो मैंने एक ऐसे आदमी के साथ पढ़ाई की जो ओलिवर बसवेल के यहाँ से जाने के बाद उनका स्टूडेंट था और सेमिनार में पढ़ाता था। तो, कॉलेज में एपोलॉजेटिक्स से मेरा इंट्रोडक्शन स्कॉटिश रियलिस्ट टाइप का था।

जिससे मैं काफी भटक गया हूँ। हाँ? यह बस कुछ ऐसा है, जो ह्यूम ने जो कहा उसके बारे में वह पूछ रहे थे, मुझे लगता है कि यह भगवान के होने के लिए कॉस्मोलॉजिकल तर्क होगा। मुझे ऐसा लगा, खैर, अपने दोस्त के साथ इस छोटी सी बातचीत में, ह्यूम ने कहा, उनके दोस्त ने यह भाषण पढ़ा और समझाया कि हम असल में अपनी दुनिया से भगवान के होने या ऐसी किसी भी चीज़ का अंदाज़ा नहीं लगा सकते।

और ह्यूम ने कहा, आह , लेकिन क्यों नहीं ? क्योंकि आप एक आधा बना हुआ घर देखते हैं, तो आप मान सकते हैं कि कोई समझदार बनाने वाला है और वह इसे पूरा कर देगा, और इस तरह की बातें। और उसके दोस्त ने जवाब दिया, हाँ, लेकिन आप भगवान के साथ ऐसा इसलिए नहीं कर सकते क्योंकि हम यहाँ दो अलग-अलग मीडियम के साथ काम कर रहे हैं। हम अपनी दुनियावी जानकारी किसी ऐसी चीज़ से ट्रांसफर कर रहे हैं जिसके बारे में हमें कोई आइडिया नहीं है।

हमारे पास भगवान से जुड़ने के लिए कोई इंप्रेशन नहीं है। और इसलिए उस मतलब में, ह्यूम ने उस दोस्त का जवाब दिया, चाहे वह उसका हो या नहीं, मुझे नहीं पता, ऐसा लगता है कि उसने कहा कि आप भगवान के बारे में कोई खास बात नहीं जान सकते। लेकिन उस दोस्त के लेटेस्ट जवाब पर ह्यूम का जवाब था, भले ही आप आउटग्रास न हों , आप उस तरह से खास बात नहीं जान सकते, लेकिन क्योंकि यह एक अनोखी रचना है या एक अनोखी इमारत है या जो भी हो, यह कुछ ऐसा है जिसे हमने पहले कभी नहीं देखा है और जिसका कोई एक्सप्लेनेशन नहीं है, हम कम से कम एक अनोखे और खास क्रिएटर का अंदाज़ा लगा सकते हैं।

हाँ, अब आप देखिए, यह उस तरह का रैशनल अंदाज़ा होगा जो यकीन को सही बनाता है। लेकिन इसका वह साइकोलॉजिकल असर नहीं होगा जो नैचुरली यकीन पैदा करेगा। तो आप पाएंगे कि दोनों को मिलाकर, वह रैशनल से साइकोलॉजिकल की ओर चला जाता है।

और जब सब कुछ सामने होता है, तो वह हमेशा साइकोलॉजिकल बेसिस पर वापस आते हैं। हाँ। ठीक है, चलिए उनके एथिक्स पर आते हैं, है ना? और यहाँ, ध्यान में रखने वाली दो मुख्य रचनाएँ हैं, बेशक, ट्रीटीज़ ऑन ह्यूमन नेचर, जो उनका शुरुआती काम है जब वह बीस साल के थे।

बुक थ्री. मुझे लगता है कि मैंने यहां पार्ट थ्री कहा था, मुझे लगता है कि वह इसे बुक थ्री कहते हैं. इसकी बुक थ्री नैतिकता के बारे में है.

काम लिखा , जो इंसानी समझ के बारे में पूछताछ के स्टाइल में था। एक छोटा काम , एक आसान काम जो उन्हें लगा कि पिछले काम के बारे में पैदा हुई सभी गलतफहमियों की वजह से ज़रूरी था। एन इंक्वायरी कंसर्निंग द प्रिंसिपल्स ऑफ़ मोरल्स।

नैतिकता के सिद्धांतों के बारे में एक जांच। अब, मुझे लगता है कि दोनों काफी हद तक एक ही बात कहते हैं। शायद अलग-अलग बातों पर ज़ोर दिया गया है, लेकिन काफी हद तक एक जैसा है।

और मैं यह बताकर शुरू करना चाहता हूँ कि तर्क और भावना के बीच के रिश्ते के बारे में वही बुनियादी मुद्दा नैतिकता में भी आता है, जैसा कि धर्म और ह्यूम की सोच के हर दूसरे हिस्से में आता है। असल में, इसी तरह उन्होंने 'इनक्वायरी कंसर्निंग द प्रिंसिपल्स ऑफ़ मोरल्स' में इस विषय को पेश किया है। क्या नैतिकता तर्क पर आधारित है या भावना पर? क्या नैतिकता तर्क पर आधारित है या भावना पर? यही सवाल है।

अब, यह देखने के लिए कि वह क्या कहना चाह रहे हैं, दो तरह के ऑब्ज़र्वेशन ज़रूरी हैं। एक, जब वह फीलिंग, या पैशन, या सेंटीमेंट कहते हैं, या कहते हैं कि हमें एक तरह की मोरल सेंस लगती है, तो वह यही वोकैबुलरी इस्तेमाल कर रहे हैं, वह रिफ्लेक्शन से जुड़े इंप्रेशन की बात कर रहे हैं । अब, आपको उनकी इंप्रेशन की थ्योरी याद होगी, कि सभी आइडिया असल में ओरिजिनल इंप्रेशन, सेंस इंप्रेशन से सुझाए गए कॉपी या इमैजिनेटिव प्रोडक्शन के तौर पर पैदा होते हैं।

तो ये आइडिया, जो कॉपी हैं या जो याददाश्त, शायद कल्पना का नतीजा हैं, हमारी अपनी मेंटल हालत पर सोचने से पता चलते हैं। तो हो सकता है कि मैं इनडायरेक्टली अपने इंप्रेशन पर सोच रहा हूँ। और ये आइडिया खुद इंप्रेशन छोड़ते हैं, जिनसे और आइडिया पैदा होते हैं।

आपको वह कहानी याद है। ठीक है। तो जब वह कहते हैं कि वह कारण या भावना, जुनून, भावना, नैतिक समझ पर चर्चा करने जा रहे हैं, कि यह सोच के इंप्रेशन से निपट रहा है, तो वह इन इंप्रेशन के बारे में बात कर रहे हैं।

हाँ, सर? हमारे अनुभव में चीज़ों के संबंध में हमारे दिमाग में आने वाले विचारों के इंप्रेशन। तो साफ़ है, अगर वह उस रास्ते पर चलने वाला है, तो वह नैतिक विश्वासों की शुरुआत का एक अनुभववादी विवरण देगा। नैतिक भावनाएँ सोच-विचार के इंप्रेशन हैं, जो पहले के सेंस इंप्रेशन और जो हो रहा है या हो सकता है, उसके विचारों से बनते हैं।

अब, भावनाएं शांत, शांत हो सकती हैं, या वे हिंसक भी हो सकती हैं। और उन्होंने इस अंतर को ट्रीटीज़ की बुक ॥ में बताया है, जो पूरी तरह से पैशन पर है। पैशन शांत हो सकते हैं, या वे हिंसक भी हो सकते हैं, ताकि सुंदरता के बारे में हमारी भावनाएं शांत रहें।

लेकिन दूसरी तरफ, हिंसक भावनाएं, हिंसक जुनून होते हैं, जैसे प्यार और नफ़रत, घमंड और जलन। हिंसक। इस मायने में नहीं कि वे ज़रूरी तौर पर किसी को चोट पहुंचा रहे हैं, बल्कि इस मायने में कि वे मज़बूत, ज़बरदस्त हैं, न कि सुंदरता की शांत, स्थिर संतुष्टि।

अब, हिंसक इंप्रेशन उन विचारों और इंप्रेशन का सीधा रिस्पॉन्स हो सकता है जो हो रहे हैं, जैसे कि खुशी और दर्द का अनुभव जो आप कर रहे हैं, और उसके बारे में आपकी फीलिंग्स हैं। या वे इनडायरेक्ट रिस्पॉन्स भी हो सकते हैं। अनुभव के इनडायरेक्ट रिस्पॉन्स जो हमारी कुछ दूसरी फीलिंग्स के साथ मिले-जुले होते हैं।

गर्व की भावना जो किसी ने आपके बारे में जो कहा है, उसके अनुभव के साथ मिली हुई है। और उससे जो भावना निकलती है, वह इनडायरेक्ट चीज़ों में से एक है, क्योंकि यह किसी और चीज़ के साथ मिली हुई है। तो, वह यह सवाल उठाकर कि नैतिकता तर्क पर आधारित है या जुनून पर, अपनी इंप्रेशन की थ्योरी पर आधारित है ।

जुनून, इमोशन, सेंटिमेंट, फीलिंग्स, ये इंप्रेशन हैं। इंप्रेशन। अगर आप चाहें, तो सेकंड-ऑर्डर इंप्रेशन।

अब, यह पहली बात है, इसे कॉन्टेक्स्ट देना। उनकी अपनी सोच में कॉन्टेक्स्ट। दूसरी बात है हिस्टोरिकल कॉन्टेक्स्ट।

ऐतिहासिक संदर्भ। क्योंकि यह सवाल कि नैतिकता तर्क पर आधारित है या भावना पर, उनके समय में नैतिकता की चर्चा में सबसे बड़ा मुद्दा था। यही सबसे बड़ा मुद्दा था।

एनलाइटनमेंट परंपरा में, बेशक, यह कहा जाता था कि एथिक्स तर्क पर आधारित है। जॉन लॉक ने कहा था कि नैतिक ज्ञान, मैथ की तरह ही डेमोंस्ट्रेटिव ज्ञान है। हाँ, ज्ञान का संबंध विचारों की सहमति और असहमति से है।

तो, अगर आपके मन में प्रॉपर्टी के अधिकार का आइडिया है, जो लॉक के अनुसार एक नैचुरल राइट है, यह कोई आर्टिफिशियल कंस्ट्रक्ट नहीं है, यह एक नैचुरल राइट है, और अगर आपके मन में चोरी का आइडिया है, तो बस उन दोनों आइडिया की तुलना करने पर, आप पाएंगे कि उनके बीच असहमति है, और आप जानते हैं कि इसलिए चोरी प्रॉपर्टी के अधिकार का उल्लंघन है। और इसलिए, नैतिक ज्ञान बस विचारों के संबंध का ज्ञान है। डेमोंस्ट्रेटिव ज्ञान।

जॉन लॉक के अनुसार। अब, ह्यूम पूरी तरह से असहमत हैं, और वह इसलिए असहमत हैं क्योंकि उन्हें नहीं लगता कि तथाकथित प्रकृति की स्थिति में किसी को भी संपत्ति का अधिकार है। आप देखिए, वह सोचते हैं, लॉक सोचते हैं, कि संपत्ति का अधिकार किसी भी नागरिक समाज के होने से पहले है।

हाँ, क्योंकि उनके पास नेचुरल लॉ एथिक्स है। लेकिन ह्यूम इससे सहमत नहीं हैं। वह नेचुरल लॉ एथिक्स को अस्वीकार करते हैं।

उनका कहना है कि नेचर की हालत का आइडिया एक मिथक है, एक फिक्शन है। न सिर्फ यह हिस्टॉरिकली मौजूद नहीं है, बल्कि आप इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते जैसा कि लॉक इसके बारे में बात करते हैं, यह लॉजिकल इनकंसिस्टेंटनेस से इतना जुड़ा हुआ है, जैसे प्रॉपर्टी के अधिकार के विचार पर, जबकि प्रॉपर्टी किसी और चीज़ के बजाय ऑर्गनाइज़्ड सोसाइटी का प्रोडक्ट है। तो, एक तरफ, वे लोग हैं जो कहते हैं कि मोरैलिटी रीज़न पर बेस्ड है, जैसे जॉन लॉक।

अब, आज के कुछ मोरल सेंस फिलॉसफर भी हैं जिन पर हम अगले हफ़्ते बात करेंगे, जैसे जोसेफ बटलर, जिन्होंने तर्क दिया कि हमारे मोरल फैसले, जब हम अपने मन में कहते हैं कि यह गलत होगा, तो आप देखिए, यह गलत होने का तुरंत एहसास होता है, लेकिन बटलर और उस परंपरा के दूसरे लोग कहेंगे कि यह एक रैशनल फैसला है। थॉमस रीड, जिनका मैंने ज़िक्र किया, स्कॉटिश रियलिस्ट हैं। उनका कहना है कि हमें गलत होने का सीधा एहसास होता है, और यह एक रैशनल फैसला है जो हम लेते हैं, और वह डेविड ह्यूम के खिलाफ तर्क देते हैं।

तो, कुछ लोग कहते हैं कि नैतिक ज्ञान ही तर्कसंगत ज्ञान है, नैतिक फैसले तर्कसंगत फैसले हैं, नैतिकता का आधार तर्क है, और ज़्यादा बुनियादी तौर पर, बेशक, किसी तरह का प्राकृतिक कानून है। दूसरी ओर, नैतिक समझ वाले दार्शनिकों में कुछ लोग हैं, जैसे मशहूर अर्ल ऑफ़ शैफ़्ट्सबरी, जो लॉक के पैट्रन थे, और फ्रांसिस हचिसन, जो इत्तेफ़ाक से शुरुआती अमेरिकी दर्शन में बहुत प्रभावशाली थे, शैफ़्ट्सबरी और हचिसन, जिन्होंने कहा कि विवेक, हमारी नैतिक समझ, गणित या डेमोन्स्ट्रेटिव रीज़निंग से ज़्यादा एस्थेटिक फ़ीलिंग के जैसी है। यह तर्कसंगत फैसले लेने से ज़्यादा नैतिक पसंद का मामला है।

आप किसी चीज़ के सही या गलत होने पर बहस नहीं कर सकते, ठीक वैसे ही जैसे आप इस बात पर बहस नहीं कर सकते कि कोई म्यूज़िक का पीस सुंदर है या नहीं, किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जिसे उसका टेस्ट नहीं है। सेंटीमेंट, फीलिंग, टेस्ट। और कुछ जगहें हैं जहाँ ह्यूम ने टेस्ट शब्द का इस्तेमाल किया है।

और हाँ, इसलिए यह हैरानी की बात नहीं है कि जो लोग भावनाओं पर इस ज़ोर पर रिएक्ट करते हैं, वे यह तर्क देने की कोशिश करते हैं कि एस्थेटिक जजमेंट भी रैशनल जजमेंट है, सिर्फ़ मोरल जजमेंट नहीं। लेकिन एस्थेटिक जजमेंट।

ताकि एस्थेटिक वैल्यूज़ के बारे में कुछ ऑब्जेक्टिव सच हो। मोरल वैल्यूज़ के बारे में कुछ ऑब्जेक्टिव हो। अब, जहाँ तक ह्यूम की बात है, ये सब सब्जेक्टिव हैं।

और जैसा कि थॉमस रीड जैसे ह्यूम के आलोचक बताते हैं, इतिहास में जो हुआ है वह कुछ ऐसा ही है। एक बार जब विचारों की थ्योरी शुरू हुई, तो मुख्य गुण सब्जेक्टिव हो गए। मैं इसे वापस लेता हूँ।

सेकेंडरी क्वालिटीज़ सब्जेक्टिव हो गईं। फिर, बर्कले के साथ, न सिर्फ़ सेकेंडरी, बल्कि प्राइमरी क्वालिटीज़ सब्जेक्टिव हो गईं। सेकेंडरी क्वालिटीज़, सब्जेक्टिव के साथ, रंग, आवाज़ और सुंदरता भी सब्जेक्टिव हो गईं।

और डेविड ह्यूम के साथ, विश्वास लॉजिकल फैसले का मामला नहीं रहा, बल्कि कुछ सब्जेक्टिव, महसूस करने का मामला बन गया। और जो बचा, वह था नैतिक विश्वास का भी सब्जेक्टिव होना। तो इसका पता आइडियाज़ की थ्योरी के असर से लगाया जा सकता है , जिसने पहले जो ऑब्जेक्टिव माना जाता था, उसे पूरी तरह से सब्जेक्टिव बना दिया।

स्कॉटिश रियलिस्ट मानते हैं कि प्राइमरी क्वालिटी और सेकेंडरी क्वालिटी दोनों ऑब्जेक्टिव हैं । कि एस्थेटिक और मोरल वैल्यू दोनों ऑब्जेक्टिव हैं । यह विश्वास एक रैशनल इंट्यूशन है, सिर्फ़ एक साइकोलॉजिकल रिस्पॉन्स नहीं।

तो इस तरह से यह मुद्दा काफी अच्छी तरह से तय है। और ह्यूम अपना नज़रिया बताने की कोशिश कर रहे हैं। अब, ह्यूम एक संयमी इंसान हैं।

वह इस बात को मानने से मना करता है कि तर्क ही नैतिकता का आधार है। वह इस बात को मानने से मना करता है कि सिर्फ़ भावना या एहसास ही नैतिकता का आधार है। हाँ, और जैसा कि मुश्किल और प्रैक्टिकल, लॉजिकल और साइकोलॉजिकल के साथ होता है, वह उस छोटे लड़के की तरह है जिसे दो तरह की पाई दी गई हो, तुम्हें कौन सी पसंद आएगी? अगर तुम चाहो तो दोनों में से थोड़ा-थोड़ा।

वह दोनों का कॉम्बिनेशन चाहता है। अब, आप देखिए, उसने धर्म में ऐसा करने की कोशिश की। क्या वह नैतिकता में ऐसा कर सकता है? वह यही करने की कोशिश करता है।

ठीक है। अगर ह्यूम के लिए नैतिकता के संबंध में तर्क की कोई भूमिका है, तो उसकी क्या भूमिका है? खैर, याद रखें कि ह्यूम के लिए तर्क दो तरह के फैसले दे सकता है, और सिर्फ़ दो। विचारों के संबंधों के बारे में फैसले और तथ्यों के बारे में फैसले।

तो तर्क की भूमिका के बारे में सवाल यह है कि नैतिकता, विचारों के संबंध और तथ्यों से जुड़ी हमारी क्या जानकारी है? सुनने में आसान लगता है। खैर, विचारों के संबंध, हाँ, नैतिक शब्दों की परिभाषाएँ। नैतिक शब्दों की परिभाषाएँ।

कहने का मतलब है, अगर हम कहते हैं कि न्याय ऐसा-ऐसा है, तो परिभाषा विचारों का एक संबंध है, और विषय और विधेय परिभाषा में सहमत हैं। इसलिए हम नैतिक शब्दों को परिभाषित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम अलग-अलग नैतिक अवधारणाओं के संबंध के बारे में बात कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, भलाई और स्वार्थ के बीच का रिश्ता। क्यों, वे एक-दूसरे से पूरी तरह सहमत नहीं हैं , है ना? ज्ञान का संबंध सहमति और असहमति से है। ठीक है, तो यह एक ऐसी चीज़ है जो तर्क कर सकता है।

दूसरी बात असल बातों से जुड़ी है। तर्क उन हालात को बता सकता है जिनमें हमें काम करना पड़ता है, हमें उन हालात के बारे में असल जानकारी दे सकता है जिनका हम सामना करते हैं, और कामों के होने वाले नतीजों की असल समझ दे सकता है। तो तर्क इन तरीकों से मदद करता है।

अब आखिरी बात पर ध्यान दें, कामों के नतीजे, क्योंकि तर्क और भावना के बीच एक मुख्य कड़ी उपयोगिता होगी। वह एक प्री-यूटिलिटेरियन यूटिलिटेरियन है। कम से कम अगर आप बेंथम और मिल के साथ यूटिलिटेरियनिज़्म की शुरुआत को देखें।

यह डेविड ह्यूम का है ; उन्हें सच में आइडिया समझ आ गया है । तो फिर तर्क क्या नहीं कर सकता? तर्क नतीजों और काम की बात को सही नहीं ठहरा सकता, नहीं। ओह, यह समझदारी की बात हो सकती है, शायद आपको बताए कि यह समझदारी होगी।

लेकिन आप समझदारी क्यों दिखाना चाहते हैं? यह असल में काम की अपील को सही नहीं ठहरा सकता। यह आपको कुछ करने के लिए मोटिवेट नहीं कर सकता। और यह किसी काम को मंज़ूरी या नामंज़ूरी नहीं दे सकता।

यह सिर्फ़ नतीजों के बारे में बता सकता है। अब, अगर तर्क किसी काम को मंज़ूरी या नामंज़ूरी नहीं दे सकता, तो आप नैतिक फ़ैसले नहीं ले सकते। नैतिक फ़ैसले मंज़ूरी या नामंज़ूरी देते हैं।

इसलिए तर्क कोई नैतिक फ़ैसला नहीं ले सकता। और क्योंकि भावनाओं के जवाब फ़ैसले नहीं होते, भावनाएँ सच या झूठ नहीं होतीं, सिर्फ़ बातें होती हैं, फ़ैसले सच या झूठ होते हैं, क्योंकि भावनाएँ सच या झूठ नहीं होतीं, इसलिए भावनाएँ कोई नैतिक फ़ैसला नहीं लेतीं। कोई नैतिक फ़ैसले नहीं होते।

देखा ? अब, नैतिक भावनाएँ होती हैं, नैतिक भावनाएँ होती हैं, जो यूटिलिटेरियन बातों को जन्म देती हैं। ठीक है, भावना का क्या? भावना का क्या रोल है? खैर, मैंने कहा कि कॉमन ग्राउंड यूटिलिटी है। और आप देख सकते हैं कि कैसे रीज़न यूटिलिटी से जुड़ता है।

भावना, उपयोगिता पर कैसे असर डालती है? खैर, आप देखिए, उपयोगिता, वो नतीजे जो सबके भले के लिए होते हैं , भलाई की भावना पर आधारित है । भलाई का मतलब है दूसरों के लिए अच्छा चाहने की इच्छा करना, चाहना और इच्छा करना। भलाई की भावना।

भलाई का मतलब है अच्छा काम करना; भलाई का मतलब है अच्छा चाहना। लेकिन दूसरों के प्रति हमारी भावनाएँ ऐसी क्यों होती हैं? हॉब्स ने कहा था, हम नहीं हैं, हम सब भूखे जानवरों की तरह हैं । और ह्यूम ईगोइज़्म के खिलाफ तर्क देते हैं।

हॉबिज़्म शब्द नफ़रत का एक शब्द था, एक ऐसे नज़रिए के लिए जिसे, मुझे नहीं लगता, हॉब्स मानते थे, कि इंसान में ज़रा भी दोस्ती या कुछ और नहीं होता। ज़ाहिर है, आप देखिए। खैर, ह्यूम इसके खिलाफ़ तर्क देते हैं।

वह कह रहे हैं कि सभी इंसानों में एक नैचुरल भलाई होती है। सभी इंसानों में एक नैचुरल परोपकारिता होती है। ओह, अलग-अलग लेवल पर, वह यह नहीं बता रहे हैं कि कितना।

यह डिग्री में बहुत अलग-अलग होता है। लेकिन कुछ नैचुरल अच्छाई होती है। ऐसा नहीं है, एक तरह से नैचुरल है।

यह कैसे डेवलप होता है? और वह एक तरह की डेवलपमेंटल मोरल साइकोलॉजी से डील कर रहा है। आप देखिए। खैर, यह हमदर्दी की भावना से डेवलप होता है।

से विकसित होती है । सहानुभूति, जिसमें, जैसा कि मुझे सहानुभूति महसूस होती है, या तो आपके लिए खुशी होती है या आपके साथ दर्द होता है। ओह, मुझे आपके लिए दुख होता है, हम कहते हैं।

मुझे आपके लिए बुरा लग रहा है। आप देखिए। तो हाँ, मुझे जो दर्द या खुशी महसूस होती है, उसमें मेरा अपना फ़ायदा शामिल है।

लेकिन मुझे हमदर्दी क्यों महसूस होगी? मुझे हमदर्दी इसलिए महसूस होती है क्योंकि समझ मुझे आपके और मेरे, आपके और मेरे अनुभव के बीच असल में एक जैसी बातें बताती है। और जुड़ाव का एक उसूल याद है? समानता। समानता।

तो जब आपके और मेरे अनुभव में समानताएं होती हैं, तो मेरे दिमाग में जो मुश्किल विचार आते हैं, उनमें हम दोनों शामिल होते हैं। हाँ। और क्योंकि उनमें हम दोनों शामिल होते हैं, इसलिए मुझे सिर्फ़ अपने लिए ही नहीं , बल्कि आपके लिए भी दुख होता है।

और सभी इंसानों में एक नैचुरल भलाई होती है। आप देखिए। खैर, तो यही उनकी बात का निचोड़ है।

इस थ्योरी को दो तरह से लेबल किया गया है। यह एक एथिकल सब्जेक्टिविज़्म है। और यह एक एथिकल नेचुरलिज़्म है।

अब, मैं उन शब्दों को समझाता हूँ जो आज भी एथिकल थ्योरी में चलन में हैं। एथिकल सब्जेक्टिविज़्म यह सोच है कि कोई ऑब्जेक्टिव नैतिक गुण नहीं होते। यानी, मामलों की ऑब्जेक्टिव स्थितियों के बारे में एथिकल तरह के कोई ऑब्जेक्टिव सच नहीं होते।

लेकिन जब मैं कहता हूँ कि कुछ गलत है, या कुछ अच्छा है, तो मैं अपनी भावनाओं, अपनी भावनाओं के बारे में बात कर रहा होता हूँ। तो इस मामले में, आप देखिए, हम भलाई के लिए हैं। मैं आपके साथ महसूस करता हूँ।

और मैं कहता हूँ कि यह बहुत बुरा है कि आपको इससे गुज़रना पड़ा। मैं असल में यह कह रहा हूँ कि जब मैं सोचता हूँ कि आप किस दौर से गुज़र रहे हैं तो मुझे दुख होता है। मैं यह नहीं कह रहा कि यह गलत है कि आपको इससे गुज़रना पड़ा ।

मैं कह रहा हूँ कि यह आपके लिए दर्दनाक है, और यह मेरे लिए भी दर्दनाक है। तो गलत और सही का लेना-देना सिर्फ़ उन लोगों की अपनी भावनाओं से है जो इसे महसूस करते हैं और इसके बारे में बात करते हैं। अब, एथिकल नेचुरलिज़्म, यह भी ऐसा ही है, हालाँकि दोनों को एक जैसा न समझें।

सब्जेक्टिविज़्म, नेचुरलिज़्म का ही एक प्रकार है, एक सब्जेक्टिविस्ट प्रकार। नेचुरलिज़्म के ऑब्जेक्टिविस्ट प्रकार भी होते हैं। एथिकल नेचुरलिज़्म यह विचार है कि नैतिकता प्रकृति पर आधारित है।

नैतिकता प्रकृति पर आधारित है। और क्योंकि यह हमारी इमोशनल साइकोलॉजी की प्रकृति पर आधारित है , आप देखिए, यह हमारी इमोशनल साइकोलॉजी पर आधारित है, ह्यूम एक नैतिक नेचुरलिस्ट हैं। और वह प्रकृति के नियमों के बारे में बात करते हैं।

अब ये अरस्तू की तरह किसी मेटाफिजिकल मतलब में नेचर के नियम नहीं हैं, या प्लेटोनिस्ट की तरह जन्मजात नहीं हैं। ये नेचर के नियम इस मतलब में नहीं हैं कि जब हम दुनिया में आए तो ये पहले से ही मौजूद थे। उन्होंने बहुत साफ कहा है कि नेचर के ये नियम आर्टिफैक्ट हैं।

लेकिन वे प्रकृति के नियम हैं, इस मायने में कि वे प्रकृति के साथ अपने आप बनते हैं । दूसरे लोगों के संबंध में हमारे साइकोलॉजिकल विकास के नेचर की वजह से। इसलिए उनके पास एक नेचुरल डेवलपमेंटल साइकोलॉजी पर आधारित एथिक है।

साइकोलॉजिकल डेवलपमेंट का नेचर और इमोशनल डेवलपमेंट का नेचर ही एथिक्स को जन्म देता है। और वह बहुत जल्दी कहते हैं कि यह डेवलपमेंट का प्रोसेस, सभी इंसानों के लिए यूनिवर्सली एक जैसा है। क्योंकि भगवान ने हमें काम करने के लिए बनाया है।

अब, चाहे वह मज़ाक में भगवान के बारे में कहे, या इसलिए कि वह सच में इस पर विश्वास करता है, यह एक अलग सवाल है। लेकिन कम से कम वह यह तो कह रहा है कि अगर आपकी सोच में ईश्वरवादी आधार है, तो ठीक है। लेकिन तुरंत आधार साइकोलॉजिकल प्रोसेस की यूनिवर्सलिटी है।

तो वह कोई एथिकल रिलेटिविस्ट नहीं है। वह प्रकृति के तीन नियम देखता है। एक का संबंध प्रॉपर्टी से है, यानी कब्ज़े की स्टेबिलिटी से।

एक का संबंध सहमति से इसे ट्रांसफर करने से है। दूसरा वादों को निभाने से है। और इसलिए वह कहते हैं कि न्याय के बारे में कानून इसी तरह बनते हैं।

और वह देशों के कानूनों के बारे में भी बात करते हैं। रोमन और एक्विनास के बाद से नेचुरल लॉ थ्योरी में कौन सा फ्रेज़ इस्तेमाल किया गया है ? देशों के कानून सभी देशों से जुड़े कानून हैं।

खैर, ये तीनों भी ऐसा ही करते हैं जिनके बारे में उन्होंने बताया है। क्योंकि पज़ेशन की सिक्योरिटी के बिना, सभी के खिलाफ़ लगातार लड़ाई होती रहेगी । सहमति से ट्रांसफर किए बिना, कोई कॉमर्स नहीं होगा।

और वादे पूरे किए बिना, कोई अलायंस या ट्रीटी नहीं होगी। तो ये ऐसे कानून हैं जो देशों के बीच काम के लिए लागू होते हैं। साथ ही लोगों के बीच भी।

लेकिन प्रकृति के ये नियम सिर्फ़ काम की चीज़ें हैं । न्याय एक काम की सोच है। न्याय बस हर किसी को उसका हक़ देने की उपयोगिता है।

खैर, यह ह्यूम की नैतिकता है। धन्यवाद।